

प्रोफेसर रमेश जैन की स्मृति में अभी तो उनसे देर तक बात हुई थी...

अभी कुछ दिन पहले ही प्रोफेसर रमेश जैन से फोन पर देर तक बात हुई थी। मैंने स्वास्थ्य का हाल पूछा तो उन्होंने सहजता से कहा था 'मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। न कोई ब्लड प्रेशर है, न कोई दूसरी बीमारी। किसी प्रकार की दवा भी नहीं लेता।' उनकी बात सुनकर मन को संतोष हुआ था। कहाँ पता था कि यह हमारी अंतिम बातचीत होगी।



7 अक्टूबर 2026 की रात उनके अचानक निधन का समाचार मिला। लगभग 84 वर्ष की आयु में उनका जाना मेरे लिए केवल एक पुराने सहकर्मी का बिछुड़ना नहीं, बल्कि चार दशक से अधिक पुराने आत्मीय संबंध का अचानक टूट जाना है। कुछ दिन पहले हुई वह बातचीत अब मेरे लिए एक अनमोल स्मृति बन गई है। रमेश जी से मेरा परिचय 1981 में राजस्थान विश्वविद्यालय के पत्राचार अध्ययन संस्थान में हुआ, जब उन्होंने सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला।

राजस्थान में दूरस्थ माध्यम से पत्रकारिता शिक्षा के विकास में रमेश जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने पत्रकारिता के पाठ्यक्रम और अध्ययन-सामग्री को अधिक प्रभावी बनाने के लिए गंभीरता और कल्पनाशीलता से कार्य किया। 1987 में कोटा खुला विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद वे वहाँ चले गए और आगे चलकर प्रोफेसर बने। पत्रकारिता की विभिन्न विधाओं पर उनकी अनेक पुस्तकें उनके दीर्घ अध्यापन और अनुभव का परिचय देती हैं। उनका यह साहित्य विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए उनकी स्थायी विरासत है।

व्यक्तित्व की दृष्टि से वे अत्यंत सरल, सहज और आत्मीय थे। उनसे बातचीत में कभी औपचारिकता महसूस नहीं हुई। वर्षों पुराना संबंध होने के कारण हर मुलाकात और बातचीत में वही अपनापन बना रहा।

रमेश जी के निधन से पत्रकारिता शिक्षा ने एक समर्पित शिक्षक और लेखक को खोया है और मैंने एक ऐसे पुराने साथी को, जिसके साथ चार दशक से अधिक की आत्मीय स्मृतियाँ जुड़ी हैं। आपकी स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि।

– प्रो. संजीव भानावत